ईशः कुत्रास्ति

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» पाठ परिचय: 'गीतांजलि' और रवीन्द्रनाथ टैगोर

प्रश्न 1 (आसान). इस पाठ के लेखक का नाम क्या है?
उत्तर – रवीन्द्रनाथ टैगोर

प्रश्न 2 (आसान). रवीन्द्रनाथ टैगोर को कौन सा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिला था?
उत्तर – नोबेल पुरस्कार

प्रश्न 3 (मध्यम). हमारा यह पाठ रवीन्द्रनाथ टैगोर की किस प्रसिद्ध कृति से लिया गया है?
उत्तर – गीतांजलि

प्रश्न 4 (कठिन). 'ईशः कुत्र अस्ति?' पाठ का मुख्य संदेश क्या है?
उत्तर – पाठ का मुख्य संदेश यह है कि ईश्वर मंदिरों या पूजा-स्थलों में ही नहीं, बल्कि मेहनतकश किसानों, मजदूरों और गरीब लोगों के कर्म और सेवा में मौजूद है।

» मंदिर में ईश्वर की अनुपस्थिति

प्रश्न 5 (आसान). कवि ने 'जपमालां' छोड़ने के लिए क्यों कहा?
उत्तर – क्योंकि कवि के अनुसार ईश्वर सिर्फ़ माला जपने से नहीं मिलते, बल्कि कर्मों में मिलते हैं।

प्रश्न 6 (आसान). मंदिर के दरवाज़े कैसे बताए गए हैं?
उत्तर – मंदिर के दरवाज़े 'पिहित' यानी बंद और 'तमोवृते' यानी अँधेरे से ढके हुए बताए गए हैं।

प्रश्न 7 (मध्यम). 'नास्त्यत्रेशः स्फुटय दृशम्' पंक्ति का क्या भाव है?
उत्तर – इस पंक्ति का भाव है कि तुम जिस जगह ईश्वर को ढूंढ रहे हो, वहाँ वे नहीं हैं। अपनी आँखें खोलो और सही जगह देखो, यानी ईश्वर बाहर वास्तविक संसार में हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). इस खंड में कवि पारंपरिक मंदिर पूजा पर प्रश्न क्यों उठा रहे हैं?
उत्तर – कवि पारंपरिक मंदिर पूजा पर प्रश्न इसलिए उठा रहे हैं क्योंकि उनका मानना है कि ईश्वर को केवल बंद मंदिरों और अनुष्ठानों में खोजना अधूरा है। वे हमें यह सिखाना चाहते हैं कि ईश्वर को पाने का सच्चा मार्ग बाहरी दुनिया में, लोगों की सेवा और मेहनत भरे कार्यों में है, न कि केवल औपचारिक पूजा-पाठ में।

» जपमाला और गीत का त्याग

प्रश्न 9 (आसान). कवि किन दो चीज़ों को त्यागने की बात करते हैं?
उत्तर – जपमाला और गीत।

प्रश्न 10 (आसान). 'स्फुटय दृशम्' का क्या अर्थ है?
उत्तर – अपनी आँखें खोलो।

प्रश्न 11 (मध्यम). कवि जपमाला और गीत को त्यागने के पीछे क्या कारण बताते हैं?
उत्तर – कवि चाहते हैं कि हम बाहरी दिखावटी भक्ति में न उलझें और अपनी आँखें खोलकर वास्तविक संसार में कर्म करते हुए ईश्वर को पहचानें।

प्रश्न 12 (कठिन). इस श्लोक के माध्यम से कवि किस प्रकार की भक्ति को प्रोत्साहित करते हैं?
उत्तर – कवि कर्मप्रधान और वास्तविक दुनिया में लोगों की सेवा करने वाली भक्ति को प्रोत्साहित करते हैं, न कि केवल बाहरी पूजा-पाठ और प्रतीकों में उलझने वाली भक्ति को।

» श्रमिकों और किसानों में ईश्वर की उपस्थिति

प्रश्न 13 (आसान). कवि के अनुसार, 'लाघऽलिकः' (किसान) कहाँ होता है?
उत्तर – कठिन भूमि पर हल चलाता हुआ।

प्रश्न 14 (आसान). 'जनपदरथ्याकर्ता' किसे कहा गया है?
उत्तर – सड़क बनाने वाले मज़दूर को।

प्रश्न 15 (मध्यम). कवि ने 'प्रस्तरखण्डान् दारयते' कहकर किस ओर इशारा किया है?
उत्तर – पत्थरों के टुकड़ों को तोड़ने वाले मज़दूर के कठिन श्रम की ओर।

प्रश्न 16 (कठिन). इस अंश के माध्यम से कवि समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं?
उत्तर – कवि संदेश देना चाहते हैं कि हमें ईश्वर को मंदिरों के बजाय मेहनतकश और श्रम करने वाले लोगों में देखना चाहिए, क्योंकि उनकी निष्ठापूर्ण मेहनत ही सच्ची भक्ति है।

» ईश्वर का मैला शरीर और त्याग का आह्वान

प्रश्न 17 (आसान). 'मलिनवपुः' का क्या अर्थ है?
उत्तर – मैला शरीर, पसीने और धूल से सना हुआ।

प्रश्न 18 (आसान). कवि हमें अपनी 'शुद्धां शाटी' को क्या करने को कहते हैं?
उत्तर – दूर फेंक देने को (त्यागने को)।

प्रश्न 19 (मध्यम). कवि 'पांसुरभूमिम्' पर आने का आह्वान क्यों करते हैं?
उत्तर – मेहनतकश लोगों के बीच सादगी से रहने और उनके जीवन का हिस्सा बनने के लिए, क्योंकि ईश्वर उन्हीं में हैं।

» मोक्ष की वास्तविक प्रकृति

प्रश्न 20 (आसान). कवि किस बात पर प्रश्न उठाते हैं?
उत्तर – मोक्ष की पारंपरिक धारणा पर।

प्रश्न 21 (आसान). ईश्वर संसार का निर्माण कैसे करते हैं?
उत्तर – लीलापूर्वक / आनंद से।

प्रश्न 22 (मध्यम). ईश्वर का हमारे प्रति स्वभाव कैसा है?
उत्तर – वे हमेशा हमारा हित चाहते हैं ('अस्मदिताभिलाषी')।

प्रश्न 23 (कठिन). गुरुदेव टैगोर मोक्ष की वास्तविक प्रकृति के बारे में क्या संदेश देते हैं?
उत्तर – वे बताते हैं कि मोक्ष संसार से पलायन करने में नहीं है, बल्कि ईश्वर की बनाई इस लीला में ही आनंद लेते हुए, मेहनत करके और सबका भला करते हुए मिलता है क्योंकि ईश्वर स्वयं हमारा हित चाहते हुए हमारे पास ही रहते हैं।

» पूजा के आडंबरों का त्याग और कार्यक्षेत्र में ईश्वर

प्रश्न 24 (आसान). कवि ने 'ध्वानं हित्वा बहिरेहि त्वं' से क्या तात्पर्य बताया है?
उत्तर – पूजा का शोर और दिखावा छोड़कर बाहर आकर कर्म करने को।

प्रश्न 25 (आसान). पूजा के कौन से आडंबरों को त्यागने की बात कही गई है?
उत्तर – फूल और धूप।

प्रश्न 26 (मध्यम). ईश्वर कहाँ मिलते हैं, कवि के अनुसार?
उत्तर – ईश्वर पसीने से लथपथ होकर मेहनत करने वाले लोगों के कार्यक्षेत्र में मिलते हैं।

प्रश्न 27 (कठिन). 'यदि तव वसनं धूसरितं स्यात्' का क्या अर्थ है और कवि इसके माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?
उत्तर – इसका अर्थ है 'अगर तुम्हारे कपड़े मिट्टी से सने हुए हैं'। कवि इसके माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि मेहनत करते हुए कपड़े गंदे या फटे हों तो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, असली चीज़ ईमानदारी से किया गया कर्म है।

» मलिन वस्त्र और क्षति का विचार

प्रश्न 28 (आसान). कवि के अनुसार, 'यदि तव वसनं धूलिधूसरितं स्यात्' का क्या अर्थ है?
उत्तर – यदि तुम्हारे कपड़े धूल से सने हुए हों।

प्रश्न 29 (आसान). अगर कपड़ों में 'सहस्रच्छिद्रं' हों, तो इसका क्या मतलब है?
उत्तर – इसका मतलब है कि कपड़े फटे-पुराने हों या उनमें बहुत सारे छेद हों।

प्रश्न 30 (मध्यम). कवि के इस विचार से क्या 'क्षति' नहीं होती?
उत्तर – कवि के अनुसार, कपड़ों के मैले या फटे होने से कोई हानि नहीं होती, क्योंकि बाहरी दिखावा महत्वहीन है।

प्रश्न 31 (कठिन). कवि हमें 'तत्त्वमिदं चिन्तय चित्ते' क्यों कहते हैं? इस बात का क्या 'तत्त्व' है?
उत्तर – कवि हमें इस बात पर मनन करने के लिए कहते हैं कि व्यक्ति का वास्तविक मूल्य उसके बाहरी रूप, जैसे कपड़ों से नहीं, बल्कि उसके आंतरिक गुणों, सच्चाई, ईमानदारी और परिश्रम से होता है। यही इस विचार का 'तत्त्व' है।

» शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

प्रश्न 32 (आसान). शब्दार्थ का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – कठिन शब्दों का अर्थ बताना।

प्रश्न 33 (आसान). 'जपाय मालाम्' का क्या अर्थ है?
उत्तर – मंत्र आदि के जपने की माला को।

प्रश्न 34 (मध्यम). 'बहिरेहि' शब्द का संधि विच्छेद और अर्थ बताइए।
उत्तर – बहिः + एहि, जिसका अर्थ है 'बाहर आओ'।

प्रश्न 35 (कठिन). 'स्वदेजलाद्रदः' शब्द से आप पाठ में किस पात्र की स्थिति का अंदाजा लगा सकते हैं और क्यों?
उत्तर – इस शब्द का अर्थ है 'पसीने से लथपथ'। इससे हम किसान या मजदूर जैसे परिश्रमी पात्र की स्थिति का अंदाजा लगा सकते हैं, क्योंकि वे कड़ी मेहनत करते हुए पसीने से भीग जाते हैं।

» अभ्यास प्रश्न और समाधान

प्रश्न 36 (आसान). रिक्स्थानं पूरयत: 'स्वेदजलार्द्रः ..... तिष्ठ।'
उत्तर – स्वेदजलार्द्रः 'पांसुरभूमिम्' तिष्ठ।

प्रश्न 37 (आसान). हिंदी व्याख्या करें: 'ईशः काभ्यां सार्धं तिष्ठति?'
उत्तर – ईश्वर किनके साथ रहता है?

प्रश्न 38 (मध्यम). सन्धिं कुरुत: 'बहिः + एहि'
उत्तर – बहिरेहि

प्रश्न 39 (कठिन). अधोलिखितपदानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत: 'हित्वा'
उत्तर – सः स्वार्थं हित्वा परोपकारं करोति। (वह स्वार्थ छोड़कर परोपकार करता है।)

» योग्यता विस्तार: नैतिक सूक्तियाँ और समभाव गीत

प्रश्न 40 (आसान). अगर कोई बच्चा खेलते हुए गिर जाए और उसे चोट लग जाए, तो आप क्या करेंगे?
उत्तर – मैं उसकी मदद करूँगा और उसे सहानुभूति दूँगा।

प्रश्न 41 (आसान). 'समभाव' का क्या अर्थ है?
उत्तर – सबको एक समान देखना और समझना।

प्रश्न 42 (मध्यम). 'मनः क्षोभं न कस्यापि प्रकुर्वीत कथञ्चन' इस सूक्ति का अपने शब्दों में क्या मतलब है?
उत्तर – हमें कभी किसी के मन को दुख नहीं पहुँचाना चाहिए या उसे ठेस नहीं देनी चाहिए।

प्रश्न 43 (कठिन). आपके अनुसार, आज के समाज में 'दीनं प्रति घृणाभावः कर्तव्यो न कदाचन' इस सीख का पालन करना क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – आज के समाज में यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे समाज में समानता आती है, कोई खुद को अकेला या नीचा महसूस नहीं करता और सब एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, जिससे शांति और सहयोग बढ़ता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. रवीन्द्रनाथ टैगोर कौन थे और उनकी किस कृति से यह पाठ संकलित है?

› पहला, हमें याद रखना चाहिए कि रवीन्द्रनाथ टैगोर एक महान भारतीय कवि, लेखक और संगीतकार थे।

› दूसरा, उन्हें साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार भी मिला था, जो उनकी असाधारण प्रतिभा का प्रमाण है।

› तीसरा, यह पाठ उनकी विश्व प्रसिद्ध रचना 'गीतांजलि' से लिया गया है, जो गीतों का एक संग्रह है और इसमें आध्यात्मिक विचार शामिल हैं।

उत्तर – रवीन्द्रनाथ टैगोर एक नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीय कवि थे, और यह पाठ उनकी विश्वविख्यात कृति 'गीतांजलि' से संकलित है।

उदाहरण 2. कवि 'देवागारे पिहितद्वारे, तमोवृतेऽस्मिन् भजसे कम्' कहकर क्या संदेश देना चाहते हैं?

› पहले पंक्ति का अर्थ समझो: 'देवागारे' मतलब देव मंदिर में, 'पिहितद्वारे' मतलब बंद दरवाजों वाले मंदिर में, 'तमोवृते' मतलब अँधेरे में, 'भजसे कम्' मतलब किसकी पूजा करते हो?

› अब पूरे वाक्य का अर्थ जोड़ो: 'देव मंदिर में, बंद दरवाजों वाले और अँधेरे से भरे मंदिर में, तुम किसकी पूजा करते हो?'

› कवि का प्रश्न एक चुनौती है। वह पूछ रहे हैं कि क्या ईश्वर वास्तव में इन्हीं बंद और अँधेरी जगहों में मिलते हैं?

› अंतिम संदेश: कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि ईश्वर केवल मंदिरों की चार दीवारों या धार्मिक कर्मकांडों में सीमित नहीं हैं। उन्हें खोजने के लिए हमें अपनी दृष्टि को व्यापक करना होगा और बाहर की दुनिया में देखना होगा।

› अतः कवि पारंपरिक मंदिर पूजा की व्यर्थता पर प्रश्न उठाते हैं, यह सुझाव देते हुए कि ईश्वर बंद दरवाजों और अँधेरे में नहीं पाए जाते हैं।

उत्तर – कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि ईश्वर को केवल बंद दरवाज़ों वाले और अँधेरे मंदिरों में ढूंढना व्यर्थ है। वे धार्मिक कर्मकांडों से ऊपर उठकर ईश्वर को वास्तविक दुनिया में, लोगों की सेवा और कर्मों में खोजने का आग्रह करते हैं।

उदाहरण 3. कवि 'जपमालां त्यज, त्यज तव गानम्' क्यों कहते हैं?

› पहला कदम: श्लोक के शाब्दिक अर्थ को समझें। 'जपमालां त्यज' का अर्थ है 'जपमाला छोड़ो' और 'त्यज तव गानम्' का अर्थ है 'अपने गीत छोड़ो'।

› दूसरा कदम: कवि के मुख्य संदेश को याद करें कि ईश्वर कहाँ है। कवि कहते हैं कि ईश्वर मंदिरों और पूजा-पाठ के बाहरी दिखावों में नहीं, बल्कि कर्म में और ज़रूरतमंदों की सेवा में है।

› तीसरा कदम: इन दोनों बातों को जोड़कर अर्थ निकालें। कवि इसलिए जपमाला और गीत छोड़ने को कहते हैं क्योंकि वे इन बाहरी प्रतीकों से हमें विचलित होने से रोकना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि हम इन चीज़ों में ही न उलझें, बल्कि अपनी आँखें खोलकर (स्फुटय दृशम्) वास्तविक संसार में ईश्वर को देखें और कर्म करें।

उत्तर – कवि 'जपमालां त्यज, त्यज तव गानम्' इसलिए कहते हैं ताकि हम बाहरी दिखावटी भक्ति को छोड़कर, अपनी आँखें खोलें और वास्तविक संसार में कर्म करते हुए ईश्वर को पहचानें।

उदाहरण 4. कवि के अनुसार ईश्वर कहाँ-कहाँ उपस्थित हैं, दो उदाहरण दीजिए?

› पहला उदाहरण कवि बताते हैं 'कठिनां भूमिं यत्रा हि कर्षति लाघöलिकः' – यानी जहाँ किसान कठिन भूमि पर हल चलाता है।

› दूसरा उदाहरण है 'यत्रा च जनपदरथ्याकर्ता प्रस्तरखण्डान् दारयते' – जहाँ सड़कों का निर्माण करने वाला मज़दूर पत्थरों के टुकड़ों को तोड़ता है।

उत्तर – कवि के अनुसार ईश्वर कठिन भूमि पर हल चलाने वाले किसान में और सड़कों का निर्माण करने वाले मज़दूर में उपस्थित हैं।

उदाहरण 5. इस श्लोक में कवि हमें ईश्वर को कहाँ खोजने और कैसे रहने का आह्वान करते हैं?

› पहला वाक्य है, 'ईशस्तिष्ठति वर्षातपयोः ताभ्यां सार्धं मलिनवपुः'। इसका अर्थ है कि ईश्वर वर्षा और धूप में उन लोगों के साथ खड़े हैं, जिनका शरीर मैला हो गया है, यानी जो कड़ी मेहनत करते हैं।

› अगले वाक्य हैं, 'दूरे क्षिप तव शुद्धां शाटीम् एहि स इव पांसुरभूमिम्'। इसका मतलब है कि अपनी साफ़-सुथरी पोशाक को दूर फेंक दो, और उन्हीं मेहनतकश लोगों की तरह धूल भरी ज़मीन पर आ जाओ।

› इन दोनों बातों को मिलाकर, कवि हमें ईश्वर को मंदिरों के बजाय मेहनतकश लोगों में खोजने और उनकी तरह सादगी से, बिना दिखावे के जीवन जीने का आह्वान करते हैं।

उत्तर – कवि हमें ईश्वर को वर्षा और धूप में मेहनत करके 'मलिन शरीर' धारण करने वाले लोगों के बीच खोजने का आह्वान करते हैं, और कहते हैं कि हमें अपनी 'शुद्ध शाटी' (साफ़ कपड़े) त्यागकर उनकी 'पांसुर भूमि' (धूल भरी ज़मीन) पर आना चाहिए। यह त्याग और परिश्रम से जीवन जीने का संदेश है।

उदाहरण 6. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार 'मोक्ष' की वास्तविक प्रकृति क्या है?

› पाठ में आए वाक्यों 'मुक्तिः? क्व नु सा दृश्या मुक्तिः!' पर ध्यान दें, जिसका अर्थ है कि कवि मोक्ष की पारंपरिक परिभाषा पर सवाल उठाते हैं।

› फिर देखें 'सलीलमीशः सृजति भुवम्' – इससे पता चलता है कि ईश्वर ने संसार को लीलापूर्वक, आनंद से रचा है, न कि एक बंधन के रूप में।

› अंत में, 'तिष्ठति चास्मदिताभिलाषी सविध्ेऽस्माकं मिषन् सदा' वाक्य बताता है कि ईश्वर हमेशा हमारा हित चाहते हुए हमारे पास ही रहते हैं और हमें देखते हैं।

› इन तीनों वाक्यों से निष्कर्ष निकलता है कि मोक्ष संसार से पलायन करने में नहीं, बल्कि इसी संसार में रहते हुए, ईश्वर की लीला को समझते हुए और सबकी भलाई करते हुए मिलता है।

उत्तर – गुरुदेव टैगोर के अनुसार, मोक्ष संसार का त्याग करने में नहीं है, बल्कि यह समझना है कि ईश्वर ने यह संसार स्वयं लीलापूर्वक बनाया है। वे हमेशा हमारा हित चाहते हुए हमारे पास ही रहते हैं। अतः असली मोक्ष इसी संसार में रहकर, ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि में आनंद लेते हुए, और दूसरों का भला करते हुए प्राप्त किया जा सकता है।

उदाहरण 7. ईश्वर को कहाँ खोजना चाहिए, और हमें क्या त्याग देना चाहिए?

› गुरुदेव टैगोर के अनुसार, 'ध्वानं हित्वा बहिरेहि त्वं' यानी हमें पूजा का शोर और दिखावा छोड़कर बाहर आना चाहिए।

› हमें 'त्यज तव कुसुमं त्यज धूपम्' – अपने फूल और धूप जैसे बाहरी आडंबरों को छोड़ देना चाहिए।

› ईश्वर 'स्वेदजलाद्रः तन्तिकटे कार्यक्षेत्रो' – पसीने से लथपथ होकर मेहनत करने वालों के पास, उनके कार्यक्षेत्र में मिलते हैं।

उत्तर – ईश्वर को अपने काम करने की जगह पर, मेहनत और ईमानदारी में खोजना चाहिए, और पूजा के बाहरी आडंबर जैसे फूल और धूप का त्याग कर देना चाहिए।

उदाहरण 8. कवि 'मलिन वस्त्र' और 'क्षति' के विचार से हमें क्या समझाना चाहते हैं?

› कवि कहते हैं, 'यदि तव वसनं धूलिधूसरितं स्यात्' – यदि तुम्हारे कपड़े धूल से सने हों।

› और 'यदि च सहस्रच्छिद्रं स्यात्' – और अगर उनमें हज़ार छेद भी हों, यानी वे फटे-पुराने हों।

› फिर भी 'का वा क्षतिरिह तेन भवेत्ते' – इससे तुम्हें क्या नुकसान होगा? कोई नुकसान नहीं होगा।

› कवि हमें 'तत्त्वमिदं चिन्तय चित्ते' – इस तत्व को अपने मन में सोचने और समझने के लिए कहते हैं।

› इससे यह स्पष्ट होता है कि बाहरी दिखावा, जैसे साफ या महंगे कपड़े पहनना, ईश्वर की दृष्टि में या हमारे सच्चे मूल्य में महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण तो हमारी आंतरिक पवित्रता, ईमानदारी और कर्मठता है।

› जैसे हम कक्षा में सबसे साफ कपड़े पहनकर आएं, लेकिन पढ़ाई में मन न लगाएं, तो उसका क्या फायदा? इसके बजाय, अगर हम साधारण कपड़े पहनकर भी खूब मन लगाकर पढ़ें, तो वह ज़्यादा मूल्यवान है।

उत्तर – कवि समझाना चाहते हैं कि हमारे कपड़े चाहे धूल से सने या फटे-पुराने हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। असली चीज़ हमारे अंदर की सच्चाई, मेहनत और कर्मठता है, न कि हमारा बाहरी दिखावा।

उदाहरण 9. पाठ से 'पांसुरभूमिये' शब्द का अर्थ और व्याकरणिक टिप्पणी समझाइए।

› पहले शब्दार्थ वाले खंड में 'पांसुरभूमिये' शब्द ढूंढेंगे।

› वहाँ हमें 'ध्ूलिध्ूसरित शमीन पर' लिखा मिलेगा, जिसका मतलब है 'धूल से सनी हुई ज़मीन पर'।

› कोई खास व्याकरणिक टिप्पणी है तो वह भी यहीं दी होगी।

उत्तर – 'पांसुरभूमिये' का अर्थ है 'धूलिधूसरित शमीन पर' यानी 'धूल से सनी हुई ज़मीन पर'। यह शब्द हमें एक जगह या स्थिति के बारे में बता रहा है।

उदाहरण 10. संस्कृतभाषया उत्तरं दीयताम्।

ईशः कुत्र अस्ति?

› सबसे पहले, प्रश्न को ध्यान से पढ़ें: 'ईशः कुत्र अस्ति?' मतलब, ईश्वर कहाँ है?

› अब पाठ को याद करें कि कवि ने ईश्वर के निवास के बारे में क्या बताया था।

› पाठ में हमने पढ़ा था कि ईश्वर वहाँ है जहाँ किसान कड़ी मेहनत करता है और पत्थर तोड़ता है।

› तो हम इसका उत्तर संस्कृत में लिखेंगे, 'ईशः तत्र अस्ति यत्र लाघुलिकः कठिनं भूमिं दारयते।'

› या फिर, 'ईशः श्रमिकेण सह तिष्ठति यः पांसुरभूमिं दारयते।'

उत्तर – ईशः तत्र अस्ति यत्र लाघुलिकः कठिनं भूमिं दारयते।

उदाहरण 11. आपके सामने एक स्थिति है: एक नया छात्र आपकी कक्षा में आया है और उसे पढ़ाई में दिक्कत हो रही है क्योंकि वह शहर से नहीं है। आप इस स्थिति में 'नैतिक सूक्तियाँ और समभाव गीत' से मिली सीख का उपयोग कैसे करेंगे?

› सबसे पहले, मैं 'मनः क्षोभं न कस्यापि प्रकुर्वीत कथञ्चन' सूक्ति को याद रखूँगा, जिसका मतलब है कि उसे नीचा दिखाकर या उसका मज़ाक उड़ाकर उसका मन नहीं दुखाऊँगा।

› दूसरा, मैं 'दीनं प्रति घृणाभावः कर्तव्यो न कदाचन' सीख को ध्यान में रखूँगा, और उसे कमज़ोर या दीन समझकर घृणा नहीं करूँगा, बल्कि उसके प्रति दया और सहानुभूति रखूँगा।

› तीसरा, 'समभाव' के सिद्धांत पर चलते हुए, मैं उसे बाकी बच्चों के बराबर मानूंगा और यह नहीं सोचूंगा कि वह गाँव से आया है या उसे कुछ नहीं आता।

› मैं उसकी मदद करूँगा, उसे पढ़ाई में जो दिक्कतें आ रही हैं, उन्हें समझने की कोशिश करूँगा और उसे अपनी किताबें या नोट्स भी दिखा सकता हूँ।

उत्तर – इस तरह, नैतिक सूक्तियों और समभाव की सीख को अपनाकर, मैं नए छात्र के प्रति दयालु, सम्मानपूर्ण और मददगार व्यवहार करूँगा, उसे अकेला महसूस नहीं होने दूँगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• इस खंड से 'भावार्थ' या 'संस्कृत में व्याख्या' पर प्रश्न अक्सर आते हैं। श्लोक का सीधा अर्थ और कवि का संदेश दोनों को अच्छे से समझकर जाना।

• यह अंश परीक्षा में अक्सर कवि के संदेश या भावार्थ के रूप में पूछा जाता है, इसलिए इसके पीछे के गहरे अर्थ को ज़रूर समझें।

• यह अंश बोर्ड परीक्षा में 'भावार्थ लेखन' या 'व्याख्या' के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। याद रखना कि यहाँ कर्म और श्रम को ही ईश्वर बताया गया है।

• इस श्लोक के भावार्थ को संस्कृत के मुख्य शब्दों जैसे 'मलिनवपुः' और 'शुद्धां शाटी' के साथ अच्छे से समझ लेना, क्योंकि इसकी व्याख्या अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछी जाती है।

• यह भाग 'ईशः कुत्र अस्ति' पाठ के केंद्रीय विचारों में से एक है। इसकी व्याख्या और निहितार्थों को अच्छे से समझकर लिखें।

• इस पाठ से अक्सर 'भावार्थ' या 'व्याख्या' से जुड़े प्रश्न आते हैं, जिसमें आपको श्लोक का अर्थ समझाना होता है कि ईश्वर कहाँ हैं और क्यों हमें आडंबर छोड़ने चाहिए।

• यह अंश आंतरिक और बाह्य सुंदरता के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है, जो संस्कृत व्याख्या और भावार्थ के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है।

• बोर्ड परीक्षा में कई बार सीधे शब्दार्थ पूछे जाते हैं, या किसी पंक्ति का अर्थ लिखने में इन शब्दार्थों का प्रयोग बहुत ज़रूरी होता है, इसलिए इन्हें ध्यान से पढ़ना।

• कभी-कभी इन सूक्तियों का अर्थ या किसी स्थिति में इनका प्रयोग करने को पूछ लिया जाता है, इसलिए इन्हें अच्छे से समझो और याद रखो।

एक नज़र में रिवीज़न

› ईश्वर मंदिर के बंद दरवाज़ों और अनुष्ठानों में नहीं, कर्मों में हैं।
› जपमाला, गीत छोड़ो, आँखें खोलो, कर्म में ईश्वर देखो।
› ईश्वर मेहनतकश किसानों और मज़दूरों के श्रम में उपस्थित हैं।
› ईश्वर मेहनतकश 'मलिनवपुः' लोगों संग, दिखावा त्याग 'पांसुरभूमि' पर आओ।
› मोक्ष संसार त्याग नहीं, बल्कि ईश्वर की लीला में रहकर सबका हित साधना।
› ईश्वर दिखावे में नहीं, कर्म और पसीने से सने कार्यक्षेत्र में है।
› मलिन/फटे वस्त्रों से हानि नहीं; आंतरिक तत्व ही महत्वपूर्ण।
› शब्दार्थ: कठिन शब्द अर्थ; टिप्पणियाँ: व्याकरणिक व्याख्या।
› नैतिक सूक्तियों से दया, सम्मान सीखें; समभाव से सबको समान मानें।